साहित्य अकादेमी
महत्तर सदस्यता

SAHITYA AKADEMI
FELLOWSHIP

सी. नारायण रेड्डी
C. NARAYANA REDDY

6 July 2015, Hyderabad

सी. नारायण रेड्डी

C. NARAYANA REDDY

डॉ. सी. नारायण रेड्डी, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता अर्पित कर रही है, एक उत्कृष्ट तेलुगु लेखक, समालोचक, कवि और गीतकार के साथ ही एक शिक्षाशास्त्री व तेलुगु साहित्य के स्वीकृत अधिकारी विद्वान हैं।

डॉ. चिंगिरेड्डी नारायण रेड्डी (जो सिनारे के नाम से भी जाने जाते हैं) का जन्म 29 जुलाई 1931 को जो निज़ाम की रियासत के नाम से जाना जाता था (बाद में आंध्र प्रदेश, अब तेलंगाना) के जनपद करीमनगर के एक छोटे से गाँव हनुमाजीपेत में हुआ। उनके माता-पिता श्रीमती बुचाम्मा और श्री मल्ला रेड्डी किसान थे और उन्होंने अपने पुत्र को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया। करीमनगर से हाईस्कूल की अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, एम.ए. की शिक्षा के लिए वे 1949 में उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद गए और 1954 में एम.ए. और 1962 में पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त की। पीएच.डी शोध के दौरान ही उन्होंने आदर्श पेशे अध्यापन को चुना और 1955 में एक महाविद्यालय में व्याख्याता हुए। एक शिक्षाशास्त्री के रूप में उनका कैरियर उनके कविकर्म के साथ चलता रहा और वह 1976 में प्रोफ़ेसर बने।

1951 में, जब वे उस्मानिया विश्वविद्यालय के एक युवा स्नातक छात्र थे, डॉ. रेड्डी ने तेलुगु विभाग द्वारा आयोजित एक कवि सम्मेलन में हिस्सा लिया। उन्होंने अग्रज कवियों के बीच अपनी पहचान बनाई, उपस्थि कवियों ने युवा रचनाकार की आंदोलित करती कविता की सराहना की। 1965 में, डॉ. रेड्डी महासचिव के रूप में तेलंगाना लेखक सम्मेलन के वार्षिक समारोह के आयोजन में सहायक रहे। इस आयोजन के बाद अपनी बहुआयामी आयोजकीय क्षमता के कारण वे तेलुगु के सभी वरिष्ठ लेखकों के काव्य अवदान से परिचित हो गए।

डॉ. श्रीनारायण रेड्डी का लेखन बहुत उर्वर है, उनका विस्तृत लेखन विविध शैलियों—लंबी कविताओं, मुख्य छंद, गद्य-नाटक, गीति-नाटक, निबंधों, साहित्यिक आलोचना, सूक्तियों, अनुवादों और ग़ज़लों की लगभग 76 प्रकाशित पुस्तकों में दर्ज है। डॉ. रेड्डी को तेलुगु और उर्दू शायरी की रवायत में गहरी दिलचस्पी है और वे दोनों ही भाषाओं में

Dr. C. Narayana Reddy on whom the Sahitya Akademi is conferring its Fellowship today is an outstanding Telugu writer, critic, poet and lyricist, as well as an educationist and acknowledged authority on Telugu literature.

Dr. Cingireddy Narayana Reddy (also known as Cinare) was born on 29 July 1931 in the small village of Hanumajipet in Karimnagar district, in what was then the Nizam's state (later known as Andhra Pradesh, and present-day Telangana). His parents Smt Buchamma and Sri Malla Reddy were agriculturalists and encouraged their son to study. After completing his high school education at Karimnagar, he went on to study at Osmania University, Hyderabad in 1949, receiving his M.A. degree in 1954 and Ph.D. in 1962. While carrying out research for his Ph.D. he took up the noble profession of teaching and became a college lecturer in 1955. His career as an educationist continued to progress alongside his poetic career and he became a Professor in 1976.

In 1951, while still a young B.A. student at Osmania University, Dr. Reddy attended a poets gathering (*kavisammelan*) organized by the Telugu Department. He made his mark in the presence of senior poets present, who appreciated the stirring poetry of the young writer. In 1956 Dr. Reddy, as General Secretary, was instrumental in organizing the Annual Celebrations of Telangana Writers Conference. He became known to all the major Telugu writers after this event because of his dynamic organizing capabilities as well as his poetic contributions.

Dr. C. Narayana Reddy is a prolific writer with over eighty published works, which span many genres including long poems, free verse, prose-plays, lyrical plays, essays, literary criticism, aphorisms, epigrams, translations and ghazals. Dr. Reddy has a deep interest in both Telugu and Urdu poetic traditions, and is a master of both the languages. He has synthesized and

सिद्धहस्त हैं। उनकी तेलुगु रचनाओं में उर्दू शायरी के सूक्ष्म प्रभाव निर्बाध रूप से संश्लेषित हैं।

डॉ. रेड्डी की पहली पुस्तक, *नव्वानी पुव्वु* (शर्मिला फूल) कविता का एक लघु खंड थी। जो 1953 में प्रकाशित हुई। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में शामिल है *वेन्नेला वादा* (चाँदनी भरा क़स्बा), 1959 में प्रकाशित, रोमानी सांगीतक नाटकों की एक पुस्तक, जिसमें तेलुगु लोकगीतों को आम पाठकों की पहुँच लायक़ प्रस्तुत किया गया है। *जलपातम* (झरना), 1949 और 1953 के बीच लिखी गई लघु कविताओं का संग्रह है, जिनमें प्रभावशाली छंद पारंपरिक मात्रिक छंदों में संयोजित हैं। *दिव्येला मुवालु* (मोमबत्ती की घंटियाँ) 1959 में प्रकाशित हुआ, जिसमें साहित्यिक व्यक्तियों के जीवन का अनुष्ठान है, साथ ही दीपावली के उत्सव को बहुत सुंदर तरीके से व्याख्यायित किया गया है। *ऋतु चक्रम* (ऋतु चक्र) 1964 में प्रकाशित हुआ, जो प्रकृति के साथ मनुष्य के अंतस्संबंध का अन्वेषण करता है, जो वर्ष भर ऋतुओं के साथ-साथ परिवर्तित होता रहता है। मध्यात्रागति मंदहासम (मध्यमवर्ग की मुस्कान), जो 1968 में छपा, में कवि मध्यवर्गीय व्यक्तियों की समस्याओं का अन्वेषण करता है और समकालीन समाज पर टिप्पणी भी करता है।

मंथालु मानवुडु (आदमी और लपटें) 1970 में छपा जो 30 लघु कविताओं का एक संग्रह है, जिसमें मनुष्य के हृदय में भरी क्रोध की ज्वाला के प्रति कवि ने अपनी आपत्ति को निरूपित किया। वह लोगो से आग्रह करता है कि समाज में प्रचलित अन्याय के प्रति अपने न्यायोचित क्रोध को सूत्रबद्ध करें। इस मुक्तछंद पुस्तक के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

अपनी कविता के लिए विख्यात डॉ. रेड्डी ने लोकप्रिय संगीत नाटक भी लिखे हैं। *रामप्पा* (1960) तेलुगु इतिहास के काकतीय काल की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है, तथा दस नाटकों का संग्रह *नारायण रेड्डी नाटिकालु* (नारायण रेड्डी की एकांकियाँ/नाटक, 1978) काव्यात्मक प्रवृत्ति के उनके संगीतात्मक नाटकों के उदाहरण हैं जिनमें कला, संगीत तथा प्रदर्शन का एक उदात्त संयोग है।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी की प्रमुख काव्यात्मक रचना *विश्वंभरा* (पृथ्वी) 1980 में प्रकाशित हुआ, जिसके लिए 1988 में ज्ञानपीठ प्रदान किया गया। इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इस स्मरणीय मुक्तछंद रचना में काल के माध्यम से मनुष्य की यात्रा को निरूपित किया गया है, जबकि वह आध्यात्मिक, कलात्मक और वैज्ञानिक उत्कर्ष को प्राप्त करने का प्रयास करता है। इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

1977 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *माटी मनीषी अक्षण* (पृथ्वी और आकाश के परे मनुष्य) जो एक सौ पृष्ठों की एक लंबी कविता है, में डॉ. रेड्डी ने मनुष्य को एक गतिशील शक्ति के रूप में दर्शाया है जो समय और स्थान की सीमाओं के पार जाने की चेष्टा करता है।

seamlessly intertwined the subtle influence of Urdu poetry in his Telugu compositions.

Dr. C. Narayana Reddy's first published work was a slim volume of poetry *Navvani Puvvu* (*The Bashful Flower*) in 1953. His notable works include *Vennela Vada* (*The Moonlit Town*) in 1959, a book of romantic musical plays, which featured Telugu folk songs in order to reach out to the common reader. *Jalapatam* (*The Waterfall*), a collection of short poems written between 1949 and 1953 consists of powerful verses composed in traditional metre. *Divvela Muvvalu* (*Candle Bells*) published in 1959, celebrates the lives of literary personalities, as well as beautifully describes the festival of Deepavali. *Ritu Chakram* (*Cycle of Seasons*) published in 1964, explores man's interaction with nature as the seasons change throughout the year. In *Madhyataragati Mandahasam* (*The Smile of the Middle Class*) published in 1968 the poet explores the problems faced by the middle class and provides a commentary on contemporary society.

Mantalu Manavudu (*Flames and the Man*) published in 1970, is a collection of thirty short poems which portray the flames of anger that rage within the hearts of the people. He urges people to channelize this justifiable anger to end the injustices prevalent in society. This stirring work of poetry written in free verse received the Sahitya Akademi Award.

While famous for his poetry, Dr. Reddy has also composed popular musical plays. *Ramappa* (1960) which draws upon the glorious cultural heritage of the Kakatiya period of Telugu history, and the collection of ten plays *Narayana Reddy Natikalu* (*Playlets of Narayana Reddy*) (1978) are examples of the poetic nature of his musical plays that are a sublime blend of art, music and performance.

Dr. C. Narayana Reddy's major poetic work *Visvambhara* (*The Earth*) published in 1980, received the Jnanpith award in 1988. This monumental work in free verse depicts the journey of man through the ages as he strives to attain spiritual, artistic, and scientific excellence. It has been translated into several Indian languages.

In his book *Matti Manishi Akasam* (*Man beyond Earth and Sky*) published in 1997, which is a long poem of around one hundred pages, Dr. Reddy portrays Man as a dynamic force who tries to transcend the boundaries of time and space.

Dr. Reddy's work spans genres and styles and is not bound by literary conventions. His poetry is suffused with the spirit of universal values such as